ओमशान्ति

मधुबन – एक मोस्ट वन्डरफुल लैण्ड

जिस धरा को स्वयं भगवान ने तलाशा हो जगत नियन्ता एवं जग निर्माता ने जिस स्थान को चुना हो, जानीजाननहार ने जिस भूमि को पसन्द किया हो, भाग्य विधाता ने जिसको संवारा हो, विश्वकर्मा ने जिसे तराशा हो, जिस बाग को स्वयं सर्वशक्तिवान बागवान ने सजाया हो, जिस धरनी के कण-कण को प्रेम के सागर के पवित्र प्रेम ने सींचा हो जिस के पेड़ पौधों को स्वयं आदि पिता ब्रह्मा ने अपने कमल हस्तों से लगाया हो जिसके फूलों में रूहों के रहनुमा ने रूहानियत की सुगन्ध भरी हो, जिसमें सर्वश्रेष्ठ रचनाकार ने अपनी मधुरिमा के रंग भरे हो, जिस बगिया को स्वयं सृष्टि के मालिक ने अपनी नजरों से निहाल किया हो, पवित्रता के सागर ने जिसकी प्रकृति में पावनता के प्रकम्पन भरे हो, जिसकी हवाओं में शीतलता के सागर ने शीतल लहरे भरी हो, जिसके पंछियों ने स्वयं मुरलीधर की मुरली सुन चहचहाना सीखा हो, जिसकी सुन्दरता में शुभभावनाओं का बल भरा हो, जिस वायुमण्डल में खुद खुदा ने बैठ सबको तपस्या कराई हो और आदि पिता आदम ने खुद बैठकर जहां तपस्या की हो, जिस बाग को वरदाता ने स्वयं बसाया हो, जिसे जगत के सर्व श्रेष्ठ माली ने पाला हो, जिस उपवन को स्नेह के समन्दर ने स्वयं सींचा हो वह विधाता की अनमोल रचना है – **मधुबन।**

बाग बगीचा वन उपवन तो दुनियां में लाखों होंगे पर मधुबन जैसा तपोवन कहीं नहीं होगा। इस तपोवन की खुशबू हर आने वाले के सर्व तनाव, दबाव से दूर कर खुशनुमा जीवन जीने का उत्साह पैदा करता है। जिन्दगी के चन्द रोज हर साल हमें भी इसकी शीतल छत्रछाया में जीने के लिए मिलते हैं। जिसकी ऊर्जा पूरे वर्ष कार्य करती है। मधुबन के कुछ अनमोल अनुभव व अति उत्तम नज़ारे जो हमारी नजर में छपे, वह हम सबसे शेयर करना चाहेंगे -

1. धरती का स्वर्ग - धरती का स्वर्ग कश्मीर को जिसने भी कहा था उसने मधुबन नहीं देखा था, दूसरा कश्मीर में मात्र प्राकृतिक सुन्दरता है जो नयनों को क्षणिक सुख प्रदान करती है पर मधुबन की तो हर बात निराली है यह तन-मन, दिल-दिमाग, वर्तमान, भविष्य, सभी को आराम व सुख प्रदान करने वाली है। मन वांछित फल प्रदान करने वाला है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी देखिये नैसर्गिक सुन्दरता, अरावली की सुरम्य श्रृंखलायें, शान्त वादियां, वेदों में वर्णित अनेक मन्दिर व गुफायें, पुराणों वर्णित अनेंक यादगारें, विश्व प्रसिद्ध अनूठी कलाकृति का अनुपम उपहार देलवाड़ा मन्दिर, शुद्ध पवित्र शीतल पवन, प्रदूषण मुक्त वायुमण्डल, प्रकृति की सुन्दरता में चार चांद लगाती नक्की झील जो राजस्थान में गर्मी के दिनों में आंखों को ठंडक का एहसास कराती है, ईमानदार व मेहनती लोग यहां की उन्नति में अपना अलग ही स्थान रखते हैं। प्रकृति की निराली छटा हर मन को सहज ही मोह लेती है। छोटा बड़ा, अमीर-गरीब कोई भी हो, इसकी सुन्दरता ने उसको अपना मुरीद न बनाया हो ऐसा हो ही नहीं सकता। आखिर डायरेक्टर (निर्माता) अपने लिए सर्वश्रेष्ठ स्थल ही चयनित करेगा ना।

2. तपस्या कुण्ड - कहीं कोई एक महापुरूष तप करता है तो उसका प्रभाव सदियों तक मानव के मन को परिवर्तन करने में सहायक होता है ऐसा लोगों का मानना है। लोगों की भावनाओं को परिवर्तन वह स्थान हजारों साल तक करता रहता है एवं वह स्थान तीर्थस्थल कहलाने लगता है और उसकी रज कण को लोग कुछ इस भाव से अपने मस्तक पर लगाते हैं कि हमारी आत्मा शुद्ध होगी, शक्तिशाली होगी इतनी वैल्यु

तपस्या की होती है। पर यहां की तो बात ही निराली है यहां एक नही, दो नही, सैकड़ों लोग एक साथ बैठकर दिन रात तपस्या रत हैं। यहां की एक बात हम बताना चाहेंगे, कहते हैं कि विश्वनाथ के मन्दिर में दीपक कभी भी बुझता नहीं है आखिर वह किसका यादगार है। साकार बाबा को कभी किसी ने सोते नहीं देखा और आज भी वहाँ 24 घंटे कोई न कोई आत्म दीप जाग्रत किये ही होता है। शाम को शान्ति स्तम्भ की योग साधना स्वर्ग की सभा से भी सुन्दर लगती है। सैकड़ों लोग कतार बद्ध हो धवल वस्त्रो से सुसज्जित दो घंटे ध्यान साधना का पावरफुल प्रकम्पन फैलाते है जो ना सिर्फ मन को शक्ति प्रदान करता है बल्कि जीवन जीने का मकसद भी पता चलता है। नयनाभिराम दृश्य का अवलोकन जिस किसी ने भी किया उसके मानस पटल पर यह दृश्य न सिर्फ सदियों तक अमिट रहेगा बल्कि रूह को राहत भी देता रहेगा व प्रेरित करता रहेगा कि हमें भी कुछ करना है बिना परमात्म बल के दुनिया के झमेलों से पार पाना सम्भव ही नहीं। यह पूरा मधुबन ही एक ऐसा तपस्या कुण्ड है, जिसके कण-कण में परमात्म बल की भासना आती है जो न सिर्फ आत्मा को गुण एवं शक्तियों से सजाता है बल्कि कठिन से कठिन संस्कारों का भी सहज परिवर्तन करने में बेजोड़ है और आत्मा पर 2500 वर्षों से लगी विकारों की जंग को उतारने में सक्षम है। हमारी बागवान से एक छोटी सी प्रार्थना है कि एक बार इस तपस्या कुण्ड में हर आत्मा को आने व शुद्ध होने का सुअवसर मिल जाता तो हमें अच्छा लगता।

3. स्नेह का बहता अनन्त स्रोत - भगवान को प्यार का सागर कहा जाता है पर प्रभु ने अपनी कर्म स्थली पर स्नेह का अनन्त स्रोत खोल दिया है जिसका हर शख्स स्नेह सम्पन्न हो स्नेह ही लुटाता है। जिसके भी सम्पर्क में जो भी कभी आता है वह ऐसे मिलता है जैसे कई जन्मों का पक्का साथ रहा हो या कोई बड़ा पदासीन हो, लेने की न चाह, न भावना अनवरत स्नेह मूर्त हो बस देते ही रहना हर कोई यहाँ से यही अनुभव करके जाता है। ऐसे स्नेह से, मीठी मुस्कान से बात करते हैं कि बार-बार मिलने का व बात करने का मन करता है। नि:स्वार्थ भावना से हर आत्मा अपनी सेवायें सदा देने के लिए तैयार रहती है। दुनियां में स्नेह करते हैं पर सदा नहीं करते व सबसे नहीं करते पर यहां स्नेह की कोई कंडीशन नहीं, सब सबसे सदा व सब एक दूसरे से अधिक करते हैं। कोई को और कुछ समझ में आया हो या न आया हो पर स्नेह रंग में हर कोई सराबोर होकर ही निकलता है, स्नेह एक ऐसा आवश्यक तत्व है जो जीवन पर्यन्त हरेक चाहता रहता है । जैसे छोटे पेड़ की तरह बड़े पेड़ को रोज पानी की जरूरत भले नहीं रहती पर बरसात के पानी की जरूरत हर पेड़ को रहती है जिसका इन्तजार वह सारा वर्ष करता है। ठीक इसी प्रकार 8 दिन के बच्चे से लेकर 80 साल के वृद्ध को भी स्नेह के शीतल नीर की सदा तलाश रहती है और यहां स्नेह की रिमझिम सदा ही लगी रहती है। जिसकी फुहार तन-मन दोनों को शीतल करती रहती है।

4. हर विभाग बेजोड़ - हर विभाग अलग-अलग हैं पर हर विभाग स्नेह सिक्त है। कोई कह सकता है कि डिसपेन्सरी भी कोई देखने की चीज है और दुनिया में पेशेन्ट अस्पताल एवं डिस्पेन्सरी जाने से घबराता है पर यहां की डिस्पेन्सरी, दिल को पेशेन्स देने वाली फूलवारी है, उसका वायब्रेशन नीरसता से कोसों दूर खुशनुमः चादर ओढ़े हुए है। डाक्टर्स व नर्सेस का वो अपना पन, दवाई को कुछ इस तरह से देना जैसे कोई उपहार दे रहे हों। पेशेन्ट को बड़े स्नेह से बुलाकर बीमारी के प्रति सचेत करना जैसे कि वह अपने किसी परम हितैषी सम्बन्धी से मिल रहे हो। फोटोकॉपी विभाग ने तो कमाल ही कर दी है जिसने भगवान के स्नेह की पूरी जेरॉक्स कॉपी ही उतार दी है वहाँ हर शख्स विशेष माना जाता है। हर व्यक्ति अपनापन महसूस करता है हर

सुविधा हरेक के लिए सीनियर लोग भी सदा देने के लिए तैयार रहते हैं। अभिमान रिंचक मात्र भी छू नहीं पाया ऐसा लगता है जान न पहचान पर जो भी कुछ खा रहे होंगे इतने प्यार से खिलायेंगे कि ना चाहते हुए भी व्यक्ति सिर झुकाकर ले ही लेगा। साहित्य विभाग, बर्तन विभाग, यातायात विभाग भोजन विभाग, दूध विभाग, टोली विभाग, एकाउन्ट डिपार्टमेन्ट किस किस से क्या नहीं मिला। कोई भोजन करना न भी चाहे तो भी खाले। खाने वाले कौन हैं, कहाँ के हैं कितने रोज खाकर चले जाते हैं पर खिलाने वाले इतने प्यार से खिलाते हैं कि आज कल की माँ क्या खिलायेगी। दूध विभाग - धुलाई विभाग ने जैसे कपड़े धोते-धोते अपनी कमियों की धूल भी धुल ली हो। टोली विभाग को तो दिलखुश विभाग नाम रखना चाहिए, मीठी टोली ने जैसे उनके अन्दर भी मधुरता का रस भर दिया हो। एकाउन्टस डिपार्टमेन्ट की बलिहारी ही कहेंगे जो सीधी साधी साधारण सी भोली-भाली बहनों को भी एक सी. ए. के जितना ही होशियार बना दिया। यह है भगवान की पढ़ाई का कमाल, दुनियां में लोग पैसे लेने के बाद भी ठीक से काम नहीं करते पर यहां पैसे तो क्या थैंक्स की भी चाहना से दूर रहकर दिल से हर व्यक्ति अपनी सेवायें देने में खुशी का इज़हार करता है। साउण्ड विभाग, सिलाई विभाग, जूते-चप्पल विभाग, ओमशान्ति भवन, आर्ट डिपार्टमेंट, बिस्तर विभाग, हर विभाग इतना रमणीकता व दिल से अपने कार्य को करता है। यहां का हरेक विभाग अपने आप में वन्डर है, साहित्य विभाग हर समय हरेक के लिए, हर हित की कामना करता है। दुनियां में तो सिर्फ 7 वन्डर्स दिखाते हैं पर यहां हर चीज हर विभाग वन्डरफुल है। ऐसा मैनेजमेंट और ऐसा स्टॉफ कहीं भी नहीं मिलेगा यह भगवान का सलेक्शन व शोकेश है जिस पर सभी को न सिर्फ नाज है बल्कि हरेक पर भावना के साथ श्रद्धा से सिर झुकाने का मन करता है। कहां मिलेगा ऐसा यूनिक परिवार जिसकी दुनियां में कहीं भी मिसाल नहीं हो सकती, किसी भी विभाग को देखिये जितना सुख व खुशी उस विभाग के काम से नहीं उससे कहीं ज्यादा उस विभाग से मिलने पर मिलती है। काश यह स्नेहमयी कार्य प्रणाली सारी दुनिया में चलने लगे।

5. अद्‌भुत मैनेजमेन्ट - किसी को किसी प्रकार का प्रेशर नहीं, कोई किसी के ऊपर नहीं फिर भी हर कार्य इतनी किफायत व यूनिक तरीके से होता है जिसके बारे में दुनियां के लोग शायद सोच भी नहीं सकते। जैसे एक बार रजिस्ट्रेशन ऑफिस के बारे में एक सूचना - पेपर देख कर एक नये भाई अपने साथी से कहने लगे कि देखिये ये सूचनायें वहां लगाई गयी जहां हम लोग फ्री बैठे होते हैं और सिम्पल पेपर पर प्लास्टिक रखकर सेलोटेप से चिपका दिया, कोई हाथ लगायेगा गंदा नहीं होगा, बारिश के महीने में सीलन से बचा रहेगा, थोड़ा ऊंचाई पर है शरीर से टच नहीं होगा जिससे हरेक तरह से सेफ रहेगा। हम लोग तो ऐसे सोचते ही नहीं हैं। बारिश में कहां क्या बिछाना है क्या ढकना है। क्या बन्द करना है फल वाले पेड़ों को कीड़ों से, वन्य प्राणियों से कैसे बचाना है, गन्दे पानी को Recycling कर पुन: कैसे यूज करना है। क्या दिमाग है, कोई किसी को कुछ कहता नहीं है फिर भी सब काम समय से पहले इतनी सरलता से हो जाते हैं। किसी को पता ही नहीं पड़ता है इतने बड़े घर में एक सूखा पत्ता न पेड़ में मिलेगा, न नीचे। जब भी क्लास में जायें तो क्लास हमेशा तैयार ही मिलेगा। जबकि क्लास समाप्त होने पर व्यवस्था सम्भालने वाले बाद में जाते हैं और हमसे पहले ही आ जाते हैं। हर व्यवस्था अपने आप में यूनिक दिखती है।

6. एक्यूरेट दिनचर्या - ब्रह्ममुहूर्त्त सभी कहते हैं पर ब्रह्ममुहूर्त्त क्यों नाम पड़ा किसी को नही पता, इस समय को सेट किया था ब्रह्मा बाप ने। 3.30 बजे उठना, भगवान का ध्यान करना फिर तैयार होना। ज्ञान-योग का क्लास कर आत्मा को सारे दिन के लिए भरपूर कर हर समस्या का सामना करने के लिए तैयार कर देना।

फिर दैनिक कार्य, दोपहर में 2 घण्टे का रेस्ट, फिर रात को क्लास कर सारे दिन का हिसाब-किताब भगवान को रात को दे 10 बजे सो जाना। शरीर व आत्मा के लिए अति उत्तम दिनचर्या। अगर रात को जल्दी उठे तो दिन में सुस्ती आयेगी, 5 बजे उठने से दिन के कार्यों में देरी होगी, जिससे कोई भी कार्य समय पर नहीं हो सकता। दुनिया में ठीक इसका उल्टा होता है - देर रात तक कार्य करना फिर सुबह देर तक सोना जबकि बचपन से हम सब पढ़ते आये हैं सूर्य उदय होने के बाद सोना पाप है एवं Early to bed, early to rise, पर करते इसके उल्टा है आत्मा को चार्ज करने के लिए तो 24 घण्टे में कहीं भी स्थान ही नहीं है इसीलिए सारी समस्यायें आती है दादी हमेशा कहा करती थी कितना भी जरुरी काम हो पर 10 माना बस। क्या दिनचर्या की सेटिंग है!

7. पॉवरफुल चार्जर - 5 हजार वर्ष की न सिर्फ थकान दूर करता है बल्कि पुन: रिचार्ज करते हैं तन-मन दोनों को मधुबन के चार धाम। लोग कहते हैं कि चार धामों की यात्रा करके आत्मा मुक्ति को प्राप्त करती है लेकिन मधुबन के चारों धामों की यात्रा करने के बाद आत्मा जीवनमुक्ति को प्राप्त करती है। शक्ति भरने का चार्जर टॉवर ऑफ पीस, व्यर्थ संकल्प जो आत्मा को भारी करते रहते उसके लिए हिस्ट्री हॉल है, स्नेह का रसपान करने के लिए बाबा रूम और दिल भारी है तो बाबा की कुटिया में जाकर सारा बोझ, सारी थकावट दूर हो जाती है। आत्मा पुन: रिचार्ज होकर अगले चक्र के लिए तैयार हो जाती है। सोचो कितना पॉवरफुल स्थान होगा जहाँ जाने से ही व्यर्थ संकल्प, बोझ खत्म हो जाता है।

8. ब्रह्मचारी युवा - विवेकानंद ने कहा था कि अगर मुझे 100 ब्रह्मचारी मिल जाये तो मैं भारत को स्वर्ग बना दूँ पर उन्हें 100 ब्रह्मचारी नहीं मिले पर यहाँ हजारों युवा ब्रह्मचारी रहते हैं। दुनिया में सन्यासी भी पवित्र रहे पर नारी से कोसों दूर रहकर पवित्र रह पाये। पर यहां एक परिवार की भांति सब एक साथ रहते हैं इसका कारण - इनकी अथक साधना एवं निरंतर पुरुषार्थ, व्यस्त रहने ज्ञान योग सम्पन्न दिनचर्या। इनके चेहरों की चमक को देखकर कोई भी बता सकता है कि इनमें पवित्रता कितनी आत्मसात हो चुकी है साधना में इनसे कोई आगे नहीं जा सकता। एक दिन हमने सोचा आज सबसे पहले बाबा रूम में हम जायेंगे हम उस रात को सोये ही नहीं, पढ़ते रहे और सवा बारह बजे चले गये तो देखा कि वहाँ एक भाई बाबा की याद में बैठे थे हमने हार मान ली कि यहाँ के तपस्वियों से आगे जाना ना मुमकिन है। छोटे-छोटे भाई, छोटी-छोटी बहनें एक-डेढ़ बजे तपस्या में बैठ जाते हैं यह कोई एक दिन की बात नहीं यह सालों का अनुभव है। सतत् साधना का रूप इन्हें असीम ऊर्जा प्रदान करता है। इन्हें ऊर्जा का पर्याय भी कह सकते हैं इनके हर काम यथावत समय से पहले ही हो जाते हैं। बड़े से बड़े कार्य एवं कठिन से कठिन कार्य यहाँ चन्द मिनटों में हो जाते हैं और चेहरों पर वही रौनक, उमंग व रूहानियत। मधुर मुस्कान के साथ हर कोई स्वागत करता, मिलता। दुनिया में यह भी कहा गया है कि कोई युवा अगर ब्रह्मचर्य का पालन करता है तो उसके चेहरे पर खुशी नहीं होगी पर यहाँ आकर कोई भी देखे तो उसकी यह धारणा क्षण भर में ही बदल जायेगी है यह है भगवान जादूगर की जादूगरी।

9. अनोखा उपवन - दुनिया में हजारों, लाखों उपवन देखे होंगे पर इस चेतन उपवन की बात ही निराली है। जहाँ के पेड़ों को भगवान ने निहारा, सींचा। दुनिया में अच्छी खाद, पानी देकर फूलों व फलों को सुन्दर व बड़ा बनाया जाता है वा कोई भी बना सकता है पर यहाँ तो काँटों को ही फूल बनाया जाता है। इस दुनिया में बहुत मिल जायेंगे जो कंकड को अलग कर सिर्फ मोती चुगते हैं पर यहाँ कंकड़ों को मोती बनाने वाले हंस

बनाया जाता है। एक ऐसा उपवन जिसकी खुशबू सारी दुनिया के मानव मन को आकर्षित करती है। इसके पौधे करीब 130 देशों में प्रस्थापित है जिनकी खुशबू अनेक विकारी बदबू को खत्म करने में निरन्तर प्रयासरत है। तमोप्रधान व जड़जड़ीभूत हो चुकी मानवता को पुन: उसकी चमक व सुन्दरता मे लाने को अनवरत कार्यरत हैं यहाँ का हर फूल अपने आप में निराला है, विशेष है। सबकी बनावट व सुन्दरता, खुशबू अलग अलग हैं इसलिए इस उपवन में बहुत वैराइटी है यह वैराइटी ही इसकी सुन्दरता है। इस उपवन में चौथी कलम के फूल हम भी है पर हमें हमेशा गर्व होता है कि हम इस उपवन के फूल हैं हमारा बागवान संसार का सर्वश्रेष्ठ रचनाकार है, हमारा माली सर्वश्रेष्ठ माली है, हमारा उपवन दुनिया का सर्वश्रेष्ठ उपवन है, हमारा स्थान दुनिया का सबसे सुन्दर, सबसे श्रेष्ठ स्थान है इसलिए जो कोई इसे देखता उसका मन गा उठता है – दिल कहे रूक जा रे रूक जा, यहीं पर कहीं,

जो बात इस जगह है, वो कहीं पर नहीं।

– ब्रह्माकुमारी सुमन, अलीगंज, लखनऊ